हर हर शंकर ॐ जय जय शंकर

श्री-वेदव्यासाय नमः

श्रीमद्-आद्य-शंकर-भगवत्पाद-परंपरागत-मूलाम्नाय-सर्वज्ञ-पीठम्
श्री-कांची-कामकोटि-पीठम्
जगद्गुरु-श्री-शंकराचार्य-स्वामि-श्रीमठ-संस्थानम्

॥ श्री-व्यास-पूर्णिमा-लघु-पूजा-पद्धतिः ॥

५१२८ पराभवः / शांकर-संवत्सरः २५३५

आषाढ-पूर्णिमा (29.07.2026)

व्यासजी की महिमा

हर संवत्सर में आषाढ मास के पूर्णिमा तिथि के दिन एक महत्वपूर्ण दिन है जब सभी मठाधिपतियों और सन्यासियों द्वारा व्यास भगवान की पूजा किया जाता है। तीनों मतों (अद्वैत विशिष्टाद्वैत और द्वैत) के लोगों व्यास भगवान की पूजा करते हैं।

व्यास भगवान ने वेद को ऋक्, यजुस्, साम, अथर्व इति चार भाग करके, पैल, वैशंपायन, जैमिनी, सुमन्तु नामक चार शिष्यों को गुरु बनाकर उनको अध्ययन भी कराये थे। इन चार शिष्यों से शुरू किया गया गुरु-शिष्य परम्परा का पालन हमारे देश में आज भी किया जा रहा है।

इसी कारण से वे वेद व्यास के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे कृष्णद्वैपायन के नाम से

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा
9884655618 8072613857 vdspsabha@gmail.com vdspsabha.org

भी जाने जाते हैं। महाभारत के आदिपर्व में उनके इस नाम के क्रम को बताया गया है ।

यो व्यस्य वेदांश्चतुरः तपसा भगवान् ऋषिः।
लोके व्यासत्वमापेदे काष्ण्यात् कृष्णत्वमेव च॥

महाभारत जिसे पाँचवाँ वेद कहते हैं वह भी उन्हीं से लिखा गया है। उन्हीं से हमें अष्टादश पुराण भी मिले हैं। सनातन धर्म से संबन्धित सारे जीवों के प्रमाणित ब्रह्म सूत्र और भक्ति रस को बढानेवाले श्रीमद्भागवत भी उन्हीं से लिखा गया है।

पुराण कहते हैं कि हर युग में आधिकारिक पुरुष के रूप में व्यास भगवान का जन्म होता है जो उस युग के मनुष्यों को उचित रूप से वेद और उस पर आधारित अन्य पुस्तकों को संकलन कर दे सकते हैं। श्री शंकर भगवत्पाद अपने बादरायण सूत्र के भाष्य में कहते हैं "**यावदधिकारम् अवस्थितिः आधिकारिकाणाम्**" द्वापर युग में अपान्तरतमस् के नाम से जाने गये वे द्वापर-कलि के सन्धि में कृष्णद्वैपायन के नाम से अवतारित हुए।

आज के शोधकर्ताओं का मानना है कि बादरायन और व्यास दो अलग व्यक्ति हैं जो सही नहीं है और ये हमारे संप्रदाय के भी खिलाफ है। पराशर के पुत्र व्यास को पाराशर्य के नाम से भी जानते हैं जिसका प्रमाण भी वेद में ऐसे दिया गया है "**स होवाच व्यासः पाराशर्यः**" ब्रह्मसूत्र भिक्षुसूत्र के नाम से भी प्रसिद्ध है। पाणिनि महर्षि अपने सूत्र में कहते है कि पाराशर्य ने ही ब्रह्मसूत्र लिखा है – "**पाराशर्यशिला-लिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः**"। इसलिए हमारे पुस्तकों में बताये गये पाराशर्य, बादरायण, वेदव्यास, कृष्णद्वैपायन, सत्यवतीसुत सब व्यास भगवान को ही संदर्भित करते हैं।

हमारे भारत को गौरव व्यास भगवान से ही मिला है। वेदान्त उपदेश के गुरु परम्परा में भी उनका मुख्य स्थान है। अद्वैत संप्रदाय के आदि गुरु नारायण से श्री शंकर भगवत्पाद और उनके शिष्यों तक के गुरु परम्परा में व्यास भगवान और उनके पुत्र शुक को मध्य स्थान देकर कहतें हैं।

आषाढ मास में वर्षा काल शुरू होती है। इस समय में सन्यासी अपने आप को घूमने वाले प्राणियों को हिंसा देने से रोकने के लिए एक ही जगह रहकर अपनी चातुर्मास्य व्रत का अनुष्ठान करने का संप्रदाय आज तक चलती आयी है। इसकी शुरुआत में ही वे आषाढ पूर्णिमा के दिन ऊपर दिए गए रूप में व्यास भगवान की पूजा करते हैं। इसी कारण आषाढ पूर्णिमा के दिन को व्यास पूर्णिमा कहते हैं।

लेकिन सिर्फ सन्यासियों को हि नहीं परंतु इस देश या पूरी दुनिया व्यास भगवान द्वारा किए गए इस बड़े उपकार को मनुष्य कभी भूल नहीं सकते। इसीलिए पूरी श्रद्धा के साथ उनकी पूजा करना हमारा कर्तव्य है।

व्यास पूर्णिमा के दिन व्यास भगवान के चित्र, उनके द्वारा रचित पुराणों, उनके द्वारा लिखित भगवद्गीता पुस्तक में या कलश स्थापना कर उसमें व्यास भगवान को आवाहन कर पूजा कर सकते हैं। हर एक घर में ये पूजा होना चाहिए। पुरुष, स्त्री सबको इसमें भाग लेना चाहिए। इससे संसार सुसंपन्न होगी, समय में वर्षा होगी, सन्तति बढेगा और रोग निवृत्ति होगा।

यही नहीं व्यास पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा भी कहा जाने के कारण गुरु परम्परा में आये हुए सभी आचार्यों को उस दिन स्मरण करना चाहिए जिसके लिए श्लोक भी दिये गये हैं। यहाँ लघु पूजा पद्धति भी नीचे दिया गया है।

(60 साल पहले, पिछले शार्वरि संवत्सर कटक मास में श्री काञ्ची कामकोटि श्री मठ के ‘कामकोटि प्रदीपं’ नामक पत्रिका और 1953 नन्दन संवत्सर के मकर मास में ब्रह्मश्री श्रीवत्स सोमदेव शर्मा के वैदिक धर्म संवर्धनी नामक संस्करण से ये लेख और नामावली दिया गया है।)

॥ पूजा-पद्धतिः ॥

(आचम्य)
[विघ्नेश्वरपूजां कृत्वा।]

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।
(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखंडे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये **पराभव**-नाम-संवत्सरे **दक्षिणायने ग्रीष्म**-ऋतौ **कटक-आषाढ**-मासे **शुक्ल**-पक्षे **पौर्णमास्यां** शुभतिथौ **सौम्य**वासरयुक्तायाम् **उत्तराषाढा**-नक्षत्र (१५:३५)युक्तायां **प्रीति**-योगयुक्तायां **भद्रा**-करण (०७:१५; **बव**-करण)युक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां **पौर्णमास्यां** शुभतिथौ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्

- उत्तराषाढा-नक्षत्रे धनूराशौ आविर्भूतानां श्रीमत्-शंकर-विजयेंद्र-सरस्वती-श्रीपादानां, शतभिषङ्-नक्षत्रे कुंभ-राशौ आविर्भूतानां श्रीमत्-सत्य-चंद्रशेखरेंद्र-सरस्वती-श्रीपादानाम् अस्माकं जगद्गुरूणां दीर्घ-आयुः-आरोग्य-सिद्ध्यर्थं,
- तैः संकल्पितानां सर्वेषां लोक-क्षेमार्थ-कार्याणां वेद-शास्त्रादि-संप्रदाय-पोषण-कार्याणां विविध-क्षेत्र-यात्रायाश्च अविघ्नतया संपूर्त्यर्थं
- कामकोटि-गुरु-परंपरायां कामकोटि-भक्त-जनानाम् अचंचल-भावशुद्ध-दृढतर-भक्ति-सिद्ध्यर्थं, परस्पर-ऐकमत्य-सिद्ध्यर्थं
- भारतीयानां महाजनानां विघ्न-निवृत्ति-पूर्वक-सत्कार्य-प्रवृत्ति-द्वारा ऐहिक-आमुष्मिक-अभ्युदय-प्राप्त्यर्थम्, असत्कार्येभ्यः निवृत्त्यर्थं
- भारतीयानां संततेः सनातन-संप्रदाये श्रद्धा-भक्त्योः अभिवृद्ध्यर्थं

- सर्वेषां द्विपदां चतुष्पदाम् अन्येषां च प्राणि-वर्गाणाम् आरोग्य-युक्त-सुख-जीवन-अवाप्त्यर्थम्
- अस्माकं सह-कुटुंबानां धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-रूप-चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्ध्यर्थं विवेक-वैराग्य-सिद्ध्यर्थं

श्री-व्यासाचार्य-प्रीत्यर्थं व्यास-पूर्णिमा-महोत्सवे यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्री-व्यासाचार्य-पूजां करिष्ये। तदंगं कलशपूजां च करिष्ये। [कलशपूजां कृत्वा।]

॥ ध्यानम् ॥

अभ्र-श्यामः पिंग-जटा-बद्ध-कलापः
प्रांशुर्दंडी कृष्णमृग-त्वक्-परिधानः।
सर्वान् लोकान् पावयमानः कवि-मुख्यः
पाराशर्यः पर्व-सुरूपं विवृणोतु॥ १ ॥

व्यासं वसिष्ठ-नप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वंदे शुक-तातं तपोनिधिम्॥ २ ॥

कृष्ण-द्वैपायनं व्यासं सर्व-भूत-हिते रतम्।
वेदाब्ज-भास्करं वंदे शमादि-निलयं मुनिम्॥ ३ ॥

विश्वरूपं च विश्वेशं विश्व-सत्ता-प्रदं शिवम्।
वेदयोनिमहं वंदे व्यासं वेदार्थ-सिद्धिदम्॥ ४ ॥

अस्मिन् चित्रपटे/पुस्तके/कलशे श्री-व्यासाचार्यान् ध्यायामि। श्री-व्यासाचार्यान् आवाहयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, स्वागतं व्याहरामि। पूर्णकुंभं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, स्नपयामि। स्नानानंतरम् आचमनीयं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, दिव्यपरिमलगंधान् धारयामि।
गंधस्योपरि हरिद्राकुंकुमं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ श्रीव्यासाचार्याष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ नारायणकुलोद्भूताय नमः
ॐ नारायणपराय नमः
ॐ वराय नमः
ॐ नारायणावताराय नमः
ॐ नारायणवशंवदाय नमः
ॐ स्वयंभूवंशसंभूताय नमः
ॐ वसिष्ठकुलदीपकाय नमः
ॐ शक्तिपौत्राय नमः
ॐ पापहंत्रे नमः
ॐ पराशरसुताय नमः १०
ॐ अमलाय नमः
ॐ द्वैपायनाय नमः
ॐ मातृभक्ताय नमः
ॐ शिष्टाय नमः
ॐ सत्यवतीसुताय नमः
ॐ स्वयमुद्भूतवेदाय नमः
ॐ चतुर्वेदविभागकृते नमः
ॐ महाभारतकर्त्रे नमः
ॐ ब्रह्मसूत्रप्रजापतये नमः
ॐ अष्टादशपुराणानां कर्त्रे नमः २०
ॐ श्यामाय नमः
ॐ प्रशिष्यकाय नमः
ॐ शुकताताय नमः
ॐ पिंगजटाय नमः
ॐ प्रांशवे नमः
ॐ दंडिने नमः
ॐ मृगाजिनाय नमः
ॐ वश्यवाचे नमः
ॐ ज्ञानदात्रे नमः
ॐ शंकरायुःप्रदाय नमः ३०
ॐ शुचये नमः
ॐ मातृवाक्यकराय नमः
ॐ धर्मिणे नमः
ॐ कर्मिणे नमः
ॐ तत्त्वार्थदर्शकाय नमः
ॐ संजयज्ञानदात्रे नमः
ॐ प्रतिस्मृत्युपदेशकाय नमः
ॐ सर्वधर्मोपदेष्ट्रे नमः
ॐ मृतदर्शनपंडिताय नमः
ॐ विचक्षणाय नमः ४०

ॐ प्रहृष्टात्मने नमः
ॐ पर्वपूज्याय नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ मुनये नमः
ॐ वीराय नमः
ॐ विश्रुतविज्ञानाय नमः
ॐ प्राज्ञाय नमः
ॐ अज्ञाननाशनाय नमः
ॐ ब्राह्मकृते नमः
ॐ पाद्मकृते नमः ५०
ॐ धीराय नमः
ॐ विष्णुकृते नमः
ॐ शिवकृते नमः
ॐ श्रीभागवतकर्त्रे नमः
ॐ भविष्यरचनादराय नमः
ॐ नारदाख्यस्य कर्त्रे नमः
ॐ मार्कंडेयकराय नमः
ॐ अग्निकृते नमः
ॐ ब्रह्मवैवर्तकर्त्रे नमः
ॐ लिंगकृते नमः ६०
ॐ वराहकृते नमः
ॐ स्कांदकर्त्रे नमः
ॐ वामनकृते नमः
ॐ कूर्मकर्त्रे नमः
ॐ मत्स्यकृते नमः
ॐ गरुडाख्यस्य कर्त्रे नमः
ॐ ब्रह्मांडाख्यपुराणकृते नमः
ॐ उपपुराणानां कर्त्रे नमः
ॐ पुराणाय नमः
ॐ पुरुषोत्तमाय नमः ७०
ॐ काशिवासिने नमः
ॐ ब्रह्मनिधये नमः
ॐ गीतादात्रे नमः
ॐ महामतये नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वसिद्धये नमः
ॐ सर्वशास्त्रप्रवर्तकाय नमः
ॐ सर्वाश्रयाय नमः
ॐ सर्वहिताय नमः
ॐ सर्वस्मै नमः ८०
ॐ सर्वगुणाश्रयाय नमः
ॐ विशुद्धाय नमः
ॐ शुद्धिकृते नमः
ॐ दक्षाय नमः
ॐ विष्णुभक्ताय नमः
ॐ शिवार्चकाय नमः
ॐ देवीभक्ताय नमः
ॐ स्कंदरुचये नमः
ॐ गणेशादृते नमः
ॐ योगविदे नमः ९०
ॐ पैलाचार्याय नमः
ॐ ऋचः कर्त्रे नमः
ॐ शाकल्यार्याय नमः
ॐ याजुषाय नमः
ॐ जैमिन्यार्याय नमः
ॐ सामकर्त्रे नमः
ॐ सुमंत्वार्याय नमः
ॐ अथर्वकृते नमः
ॐ रोमहर्षणसूतार्याय नमः

ॐ लोकाचार्याय नमः १००
ॐ महामुनये नमः
ॐ व्यासकाशीरतये नमः
ॐ विश्वपूज्याय नमः
ॐ विश्वेशपूजकाय नमः
ॐ शांताय नमः
ॐ शांताकृतये नमः
ॐ शांतचित्ताय नमः
ॐ शांतिप्रदाय नमः १०८

श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, अमृतं महानैवेद्यं पानीयं च निवेदयामि। निवेदनानंतरम् आचमनीयं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, कर्पूरतांबूलं समर्पयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, मंगलनीराजनं दर्शयामि।
श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

श्री-व्यासाचार्येभ्यो नमः, प्रार्थनाः समर्पयामि।

जयति पराशरसूनुः
सत्यवतीहृदयनंदनो व्यासः।
यस्यास्यकमलगलितं
वाङ्मयममृतं जगत् पिबति॥

॥ व्यास-पूजा-चक्र-देवता-स्मरणम् ॥

कृष्णाय शुद्धचैतन्याय नमः
वासुदेवाय नमः
संकर्षणाय नमः
प्रद्युम्नाय नमः
अनिरुद्धाय नमः
ब्रह्मणे नमः
सरस्वत्यै नमः
सनकाय नमः
सनंदनाय नमः
सनातनाय नमः
सनत्कुमाराय नमः
सनत्सुजाताय नमः
नारदाय नमः
वेदव्यासाय नमः

शुकाय नमः
पैलाय नमः
वैशंपायनाय नमः
जैमिनये नमः
सुमंतवे नमः
द्रविडाचार्येभ्यो नमः
गौडपादाचार्येभ्यो नमः
गोविंदभगवत्पादाचार्येभ्यो नमः
शंकराचार्येभ्यो नमः
पद्मपादाचार्येभ्यो नमः
सुरेश्वराचार्येभ्यो नमः

हस्तामलकाचार्येभ्यो नमः
तोटकाचार्येभ्यो नमः
संक्षेपकाचार्येभ्यो नमः
विवरणाचार्येभ्यो नमः
परात्परगुरुभ्यो नमः
परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः
परमगुरुभ्यो नमः
गुरुभ्यो नमः
अन्येभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदायकर्तृभ्य
आचार्येभ्यो नमः

निगमानपि योऽन्वशाच्चतुर्धा
व्यधिताष्टादशधाऽपि यः पुराणम्।
स च सात्यवतेय ईप्सितं मे
सकलाम्नायशिरोगुरुर्विधत्ताम् ॥१॥

शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणम्।
सूत्रभाष्यकृतौ वंदे भगवंतौ पुनः पुनः ॥२॥

(अत्र जगद्गुरुपरंपरास्तवं पठेत्)

जय जय शंकर हर हर शंकर
जय जय शंकर हर हर शंकर।
कांचीशंकर कामकोटिशंकर
हर हर शंकर जय जय शंकर॥

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन श्री-व्यासाचार्याः प्रीयंताम्।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

❁

॥ व्यासाष्टकस्तोत्रम् ॥

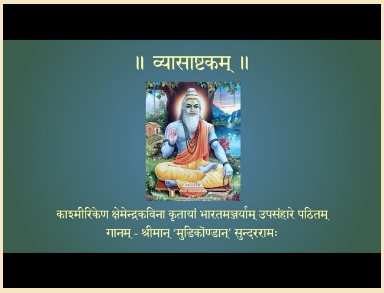

You Tube https://youtu.be/SuZE7LgBtdg

नमो ज्ञानानलशिखापुंजपिंगजटाभृते।
कृष्णायाकृष्णमहसे कृष्णद्वैपायनाय ते॥ १ ॥

नमस्तेजोमयश्मश्रुप्रभाशबलितत्विषे।
वक्त्रवागीश्वरीपद्मरजसेवोदितश्रिये ॥ २ ॥

नमः संध्यासमाधाननिष्पीतरवितेजसे।
त्रैलोक्यतिमिरोच्छेददीपप्रतिमचक्षुषे ॥ ३ ॥

नमः सहस्रशाखाय धर्मोपवनशाखिने।
सत्त्वप्रतिष्ठापुष्पाय निर्वाणफलशालिने॥ ४ ॥

नमः कृष्णाजिनजुषे बोधनंदनवासिने।
व्याप्तायेवालिजालेन पुण्यसौरभलिप्सया॥ ५ ॥

नमः शशिकलाकारब्रह्मसूत्रांशुशोभिने।
श्रिताय हंसकांत्येव संपर्कात् कमलौकसः॥ ६ ॥

नमो विद्यानदीपूर्णशास्त्राब्धिसकलेंदवे।
पीयूषरससाराय कविव्यापारवेधसे॥ ७ ॥

नमः सत्यनिवासाय स्वविकाशविलासिने।
व्यासाय धाम्ने तपसां संसारायासहारिणे॥ ८ ॥

॥ इति काश्मीरिकेण क्षेमेंद्रकविना कृतायां भारतमंजर्याम् उपसंहारे पठितं व्यासाष्टकं संपूर्णम् ॥

❁

॥ श्रीकांचीकामकोटिपीठजगद्गुरुपरंपरास्तवः ॥

(पंचषष्टितमैः पीठाधिपतिभिः श्रीमत्सुदर्शनमहादेवेंद्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतः)

[गुरवे सर्व-लोकानां भिषजे भव-रोगिणाम् ।
निधये सर्व-विद्यानां दक्षिणामूर्तये नमः ॥ *० ॥]

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्-पुत्र-पराशरं च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महांतं गोविंद-योगींद्रमथास्य शिष्यम् ॥ १ ॥

श्री-शंकराचार्यमथास्य पद्म-पादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।
तं तोटकं वार्तिक-कारमन्यान् अस्मद्-गुरून् संततमानतोऽस्मि ॥ २ ॥

सदाशिव-समारंभां शंकराचार्य-मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य-पर्यंतां वंदे गुरु-परंपराम् ॥ ३ ॥

(१) सर्व-तंत्र-स्वतंत्राय सदाऽऽत्माद्वैत-वेदिने ।
श्रीमते शंकरार्याय वेदांत-गुरवे नमः ॥ ४ ॥

(*) अविप्लुत-ब्रह्मचर्यान् अन्वितेंद्र-सरस्वतीन् ।
आत्त-मिथ्यावार-पथान् अद्वैताचार्य-संकथान् ॥ ५ ॥

आ-सेतु-हिमवच्छैलं सदाचार-प्रवर्तकान् ।
जगद्-गुरून् स्तुमः कांची-शारदा-मठ-संश्रयान् ॥ ६ ॥

(२) पवित्रितेतराद्वैत-मठ-पीठी-शिरोभुवे ।
श्री-कांची-शारदा-पीठ-गुरवे भव-भीरवे ॥ ७ ॥

वार्तिकादि-ब्रह्म-विद्या-कर्त्रे ब्रह्मावतारिणे ।
सुरेश्वराचार्य-नाम्ने योगींद्राय नमो नमः ॥ ८ ॥

(३) अपोऽश्नन्नेव जैनान् य आ-प्राग्ज्योतिषमाच्छिनत् ।
शिशुमाचार्य-वाग्-वेणी-रय-रोधि-महोबलम् ॥ ९ ॥

संक्षेप-शारीर-मुख-प्रबंध-विवृताद्वयम् ।
ब्रह्मस्वरूपार्य-भाष्य-शांत्याचार्यक-पंडितम् ॥ १० ॥

सर्वज्ञ-चंद्र-नाम्ना च सर्वतो भुवि विश्रुतम् ।
सर्वज्ञ-सद्-गुरुं वंदे सर्वज्ञमिव भू-गतम् ॥ ११ ॥

(४) मेधाविनं सत्यबोधं व्याधूत-विमतोच्चयम् ।
प्राच्य-भाष्य-त्रय-व्याख्या-प्रवीणं प्रभुमाश्रये ॥ १२ ॥

(५) ज्ञानानंद-मुनींद्रार्यं ज्ञानोत्तम-पराभिधम् ।
चंद्रचूड-पदासक्तं चंद्रिका-कृतमाश्रये ॥ १३ ॥

(६) शुद्धानंद-मुनींद्राणां विद्धार्हत-मत-त्विषाम् ।
आनंदज्ञान-सेव्यानाम् आलंबे चरणांबुजम् ॥ १४ ॥

(७) सर्व-शांकर-भाष्यौघ-भाष्य-कर्तारमद्वयम् ।
सर्व-वार्तिक-सद्-वृत्ति-कृतं श्रीशैल-गं भजे ॥ १५ ॥

(८) कैवल्यानंद-योगींद्रान् केवलं राज-योगिनः ।
कैवल्य-मात्र-निरतान् कलयेम जगद्-गुरून् ॥ १६ ॥

(९) श्री-कृपाशंकरार्याणां मर्यादातीत-तेजसाम् ।
षण्मताचार्यक-जुषाम् अंघ्रि-द्वंद्वमहं श्रये ॥ १७ ॥

(१०) महिष्ठाय नमस्तस्मै महादेवाय योगिने ।
सुरेश्वरापराख्याय गुरवे दोष-भीरवे ॥ १८ ॥

(११) स्तुमः सदा शिवानंद-चिद्घनेंद्र-सरस्वतीन् ।
कामाक्षी-चंद्रमौल्यर्चा-कलनैक-लसन्मतीन् ॥ १९ ॥

(१२) सार्वभौमाभिध-महा-व्रत-चर्या-परायणान् ।
वंदे जगद्-गुरूंश्चंद्रशेखरेंद्र-सरस्वतीन् ॥ २० ॥

(१३) समा-द्वात्रिंशदत्युग्र-काष्ठ-मौन-समाश्रयान् ।
जित-मृत्यून् महा-लिंग-भूतान् सच्चिद्घनान् नुमः ॥ २१ ॥

(१४) महा-भैरव-दुस्तंत्र-दुर्दांत-ध्वांत-भास्करान् ।
विद्याघनान् नमस्यामि सर्व-विद्या-विचक्षणान् ॥ २२ ॥

(१५) आचार्य-पद-पाथोज-परिचर्या-परायणम् ।
गंगाधरं नमस्यामः सदा गंगाधरार्चकम् ॥ २३ ॥

(१६) जगज्जयि-सु-सौराष्ट्र-जरद्दृष्टि-मदापहान् ।
शाक-सिल्हक-दर्प-घ्नान् ईडीमहि महायतीन् ॥ २४ ॥

(१७) चतुस्समुद्री-क्रोड-स्थ-वर्णाश्रम-विचारकान् ।
श्रित-विप्र-व्रज-स्कंध-सुवर्णांदोलिका-चरान् ॥ २५ ॥

प्रत्यहं ब्रह्म-साहस्र-संतर्पण-धृत-व्रतान् ।
सदाशिव-समाह्वानान् स्मरामः सद्-गुरून् सदा ॥ २६ ॥

(१८) माया-लोकायती-भूत-बृहस्पति-मदापहान् ।
वंदे सुरेंद्र-वंद्यांघ्रीन् श्री-सुरेंद्र-सरस्वतीन् ॥ २७ ॥

(१९) श्रीविद्या-करुणा-लब्ध-ब्रह्म-विद्या-हृतामयान् ।
वंदे वशंवद-प्राणान् मुनीन् विद्याघनान् मुहुः ॥ २८ ॥

(२०) विद्याघन-कृपा-लब्ध-सर्व-वेदांत-विस्तरम् ।
कौतस्कुतोत्पात-केतुं निश्शंकं नौमि शंकरम् ॥ २९ ॥

(२१) चंद्रचूड-पद-ध्यान-प्राप्तानंद-महोदधीन् ।
यतींद्रांश्चंद्रचूडेंद्रान् स्मरामि मनसा सदा ॥ ३० ॥

(२२) नमामि परिपूर्ण-श्री-बोधान् ग्रावाभिलापकान् ।
यदीक्षणात् पलायंत प्राणिनामामयाधयः ॥ ३१ ॥

(२३) सच्चित्सुखान् प्रपद्येऽहं सुखमाप्त-गुहा-स्थितीन् ।
(२४) चित्सुखाचार्यमीडेऽहं सत्सुखं कोंकणाश्रयम् ॥

(२५) भजे श्री-सच्चिदानंद-घनेंद्रान् रस-साधनात् ।
लिंगात्मना परिणतान् प्रभासे योग-संश्रिते ॥ ३३ ॥

(२६-२७-२८) भगवत्पाद-पादाब्जासक्ति-निर्णिक्त-मानसान् ।
प्रज्ञाघनं चिद्विलासं महादेवं च मैथिलम् ॥ ३४ ॥

(२९-३०) पूर्णबोधं च बोधं च भक्ति-योग-प्रवर्तकम् ।
(३१) ब्रह्मानंदघनेंद्रं च नमामि नियतात्मनः ॥ ३५ ॥

(३२) चिदानंदघनेंद्राणां लंबिका-योग-सेविनाम् ।
जीर्ण-पर्णाशिनां पादौ प्रपद्ये मनसा सदा ॥ ३६ ॥

(३३) सच्चिदानंद-नामानं शिवार्चन-परायणम् ।
भाषा-पंचदशी-प्राज्ञं भावयामि सदा मुदा ॥ ३७ ॥

(३४) भू-प्रदक्षिण-कर्मैक-सक्तं श्री-चंद्रशेखरम् ।
त्रात-दावाग्नि-संदग्ध-किशोरकमुपास्महे ॥ ३८ ॥

(३५) चित्सुखेंद्रं सुखेनैव क्रांत-सह्य-गुहा-गृहम् ।
काम-रूप-चरं नाना-रूप-वंतमुपास्महे ॥ ३९ ॥

(३६) निर्दोष-संयम-धरान् चित्सुखानंद-तापसान् ।
(३७) विद्याघनेंद्रान् श्रीविद्या-वशी-कृत-जनान् स्तुमः ॥

(३८) शंकरेंद्र-यतींद्राणां पादुके ब्रह्म-संभृते ।
नमामि शिरसा याभ्यां त्रीन् लोकान् व्यचरन्मुनिः ॥ ४१ ॥

(३९-४०) सच्चिद्विलास-योगींद्रं महादेवेंद्रमुज्ज्वलम् ।
(४१) गंगाधरेंद्रमप्येतान् नौमि वादि-शिरोमणीन् ॥

(४२-४३) ब्रह्मानंदघनेंद्राख्यांस्तथाऽऽनंदघनानपि ।
(४४) पूर्णबोध-महर्षींश्च ज्ञान-निष्ठानुपास्महे ॥ ४३

(४५) वृत्त्याऽऽजगर्या श्रीशैल-गुहा-गृह-कृत-स्थितीन् ।
श्रीमत्-परशिवाभिख्यान् सर्वातीतान् श्रये सदा ॥ ४४ ॥

(४६-४७) अन्योन्य-सदृशान्योन्यौ बोध-श्री-चंद्रशेखरौ ।
प्रणवोपासना-सक्त-मानसौ मनसा श्रये ॥ ४५ ॥

(४८) मुक्ति-लिंगार्चनानंद-विस्मृताशेष-वृत्तये ।
चिदंबर-रहस्यंतर्लीन-देहाय योगिने ॥ ४६ ॥

अद्वैतानंद-साम्राज्य-विद्रुताशेष-पाप्मने ।
अद्वैतानंदबोधाय नमो ब्रह्म समीयुषे ॥ ४७ ॥

(४९-५०) श्रये महादेव-चंद्रशेखरेंद्र-महामुनी ।
महाव्रत-समारब्ध-कोटि-होमांत-गामिनौ ॥ ४८ ॥

(५१) विद्यातीर्थ-समाह्वानान् श्रीविद्या-नाथ-योगिनः ।
विद्यया शंकर-प्रख्यान् विद्यारण्य-गुरून् भजे ॥ ४९ ॥

(५२) शंकरानंद-योगींद्र-पद-पंकजयोर्युगम् ।
बुक्क-भूप-शिरोरत्नं स्मरामि सततं हृदा ॥ ५४ ॥

(५३) श्री-पूर्णानंद-मौनींद्रं नेपाल-नृप-देशिकम् ।
अव्याहत-स्व-संचारं संश्रयामि जगद्-गुरुम् ॥ ५५ ॥

(५४-५५) महादेवश्च तच्छिष्यश्चंद्रशेखर-योग्यपि ।
स्तां मे हृदि सदा धीरावद्वैत-मत-देशिकौ ॥ ५६ ॥

(५६) प्रवीर-सेतु-भूपाल-सेवितांघ्रि-सरोरुहान् ।
भजे सदाशिवेंद्र-श्री-बोधेश्वर-गुरून् सदा ॥ ५७ ॥

(५७) सदाशिव-श्री-ब्रह्मेंद्र-धृत-स्व-पद-पादुकान् ।
धीरान् परशिवेंद्रार्यान् ध्यायामि सततं हृदि ॥ ५८ ॥

(५८) आत्मबोध-यतींद्राणामा-शीताचल-चारिणाम् ।
अन्य-श्री-शंकराचार्य-धी-कृतामंघ्रिमाश्रये ॥ ५९ ॥

(५९) भगवन्नाम-साम्राज्य-लक्ष्मी-सर्वस्व-विग्रहान् ।
श्रीमद्-बोधेंद्र-योगींद्र-देशिकेंद्रानुपास्महे ॥ ६० ॥

(६०) अद्वैतात्मप्रकाशाय सर्व-शास्त्रार्थ-वेदिने ।
विधूत-सर्व-भेदाय नमो विश्वातिशायिने ॥ ६१ ॥

(६१) आ सप्तमाज्जीर्ण-पर्ण-जल-वातारुणांशुभिः ।
कृत-स्व-प्राण-यात्राय महादेवाय सन्नतिः ॥ ६२ ॥

(६२) चोल-केरल-चेरौड्र-पांड्य-कर्णाट-कोंकणान् ।
महाराष्ट्रांध्र-सौराष्ट्र-मगधादींश्च भू-भुजः ॥ ६३ ॥

शिष्याना-सेतु-शीताद्रि शासते पुण्य-कर्मणे ।
श्री-चंद्रशेखरेंद्राय जगतो गुरवे नमः ॥ ६४ ॥

(६३) निष्पाप-वृत्तये नित्य-निर्धूत-भव-क्लृप्तये ।
महादेवाय सततं नमोऽस्तु नत-रक्षिणे ॥ ६५ ॥

(६४) श्रीविद्योपासना-दार्ढ्य-वशी-कृत-चराचरान् ।
श्री-चंद्रशेखरेंद्रार्यान् शंकर-प्रतिमान् नुमः ॥ ६६ ॥

॥ परिशिष्टम् ॥

(६५) कलानामाश्रयं देवी-सान्निध्यानुभुवं सदा ।
सुदर्शन-महादेव-गुरुं सत्येक्षणं नुमः ॥ *१ ॥

(६६) अद्वैत-रक्षणे विज्ञान् वाग्मी यः प्रैरयद् दृढम् ।
श्री-चंद्रशेखरेंद्रो मे धुनोत्वांतर-कल्मषम् ॥ *२ ॥

(६७) गुरु-शुश्रूषणासक्ति-समर्पित-निजाखिलम् ।
युवानं शांति-भूमानं महादेवं गुरुं श्रये ॥ *३ ॥

(६८) अपार-करुणा-सिंधुं ज्ञान-दं शांत-रूपिणम् ।
श्री-चंद्रशेखर-गुरुं प्रणमामि मुदाऽन्वहम् ॥ *४ ॥

(६९) देवे देहे च देशे च भक्त्यारोग्य-सुख-प्रदम् ।

बुध-पामर-सेव्यं तं श्री-जयेंद्रं नमाम्यहम् ॥ *५ ॥

(७०) नमामः शंकरान्वाख्य-विजयेंद्र-सरस्वतीम् ।
श्री-गुरुं शिष्ट-मार्गानुनेतारं सन्मति-प्रदम् ॥ *६ ॥

(*) श्री-कांची-शारदा-पीठ-संस्थितानामिमां क्रमात् ।
स्तुतिं जगद्-गुरूणां यः पठेत् स सुख-भाग् भवेत् ॥ ६७ ॥

॥ व्यासाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

नारायणकुलोद्भूतो नारायणपरो वरः।
नारायणावतारश्च नारायणवशंवदः ॥ १ ॥

स्वयंभूवंशसंभूतो वसिष्ठकुलदीपकः।
शक्तिपौत्रः पापहंता पराशरसुतोऽमलः ॥ २ ॥

द्वैपायनो मातृभक्तः शिष्टः सत्यवतीसुतः।
स्वयमुद्भूतवेदश्च चतुर्वेदविभागकृत् ॥ ३ ॥

महाभारतकर्ता च ब्रह्मसूत्रप्रजापतिः।
अष्टादशपुराणानां कर्ता श्यामः प्रशिष्यकः ॥ ४ ॥

शुकतातः पिंगजटः प्रांशुर्दंडी मृगाजिनः।
वश्यवाग् ज्ञानदाता च शंकरायुःप्रदः शुचिः ॥ ५ ॥

मातृवाक्यकरो धर्मी कर्मी तत्त्वार्थदर्शकः।
संजयज्ञानदाता च प्रतिस्मृत्युपदेशकः ॥ ६ ॥

सर्वधर्मोपदेष्टा च मृतदर्शनपंडितः।
विचक्षणः प्रहृष्टात्मा पर्वपूज्यः प्रभुर्मुनिः ॥ ७ ॥

वीरो विश्रुतविज्ञानः प्राज्ञश्चाज्ञाननाशनः।
ब्राह्मकृत् पाद्मकृद् धीरो विष्णुकृच्छिवकृत् तथा ॥ ८ ॥

श्रीभागवतकर्ता च भविष्यरचनादरः।
नारदाख्यस्य कर्ता च मार्कंडेयकरोऽग्निकृत्॥ ९॥

ब्रह्मवैवर्तकर्ता च लिंगकृच्च वराहकृत्।
स्कांदकर्ता वामनकृत् कूर्मकर्ता च मत्स्यकृत्॥ १०॥

गरुडाख्यस्य कर्ता च ब्रह्मांडाख्यपुराणकृत्।
उपपुराणानां कर्ता पुराणः पुरुषोत्तमः॥ ११॥

काशिवासी ब्रह्मनिधिर्गीतादाता महामतिः।
सर्वज्ञः सर्वसिद्धिश्च सर्वशास्त्रप्रवर्तकः॥ १२॥

सर्वाश्रयः सर्वहितः सर्वः सर्वगुणाश्रयः।
विशुद्धः शुद्धिकृद् दक्षो विष्णुभक्तः शिवार्चकः॥ १३॥

देवीभक्तः स्कंदरुचिर्गणेशादृच्च योगवित्।
पैलाचार्य ऋचः कर्ता शाकल्यार्यश्च याजुषः॥ १४॥

जैमिन्यार्यः सामकर्ता सुमंत्वार्योऽप्यथर्वकृत्।
रोमहर्षणसूतार्यो लोकाचार्यो महामुनिः॥ १५॥

व्यासकाशीरतिर्विश्वपूज्यो विश्वेशपूजकः।
शांतः शांताकृतिः शांतचित्तः शांतिप्रदस्तथा॥ १६॥
॥ इति व्यासाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

❀❀❀

Śrī Vyāsācārya with Śrī Śaṅkarācārya

Translators: Brahmashri Thanjavur Venkatesan (Telugu), Shri Ganesan Srinivasan (English), Shri Dr P P Narayanaswami (Malayalam), Shri Ramaprasad K V (Kannada) and Sou Vancchitha Bharaneedharan (Hindi).